

समाज कार्य परामर्श में स्नातकोत्तर उपाधि

(एम.एस.डब्ल्यू. परामर्श द्वितीय वर्ष)

सत्रीय कार्य : 2026–2027

पाठ्यक्रम शीर्षक

- एम.एस.डब्ल्यू-012: जीवन की विशेषताओं और चुनौतियों का परिचय
एम.एस.डब्ल्यू-013: परामर्श के मनोवैज्ञानिक आधार का परिचय
एम.एस.डब्ल्यू-014: परामर्श में सामाजिक वैयक्तिक कार्य की प्रासंगिकता
एम.एस.डब्ल्यू-015: परामर्श के मूल तत्व
एम.एस.डब्ल्यू-016: परामर्श के क्षेत्र

अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य जमा कराने की अन्तिम तारीख:
जुलाई, 2026 सत्र – 31 मार्च, 2027
जनवरी, 2027 सत्र – 30 सितम्बर, 2027



समाज कार्य विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110 068

प्रिय शिक्षार्थी,

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के समाज कार्य (परामर्श) में स्नातकोत्तर कार्यक्रम (द्वितीय वर्ष) में आपका स्वागत है। आपने समाज कार्य में स्नातकोत्तर होने के लिए यह कार्यक्रम एक उद्देश्य के साथ चुना है ताकि आप मानवजाति की सामाजिक दशाएं सुधार सकें। समाज कार्य (परामर्श) कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए, कृपया निम्नलिखित बातों का पालन करें:

अपना अध्ययन आरंभ करने से पहले कार्यक्रम दर्शिका को पढ़िए। इससे इग्नू के समाज कार्य (परामर्श) कार्यक्रम का अध्ययन करने के बारे में आपके अधिकतर संदेह दूर हो जाएंगे।

- आप अपने सत्रीय कार्य अपने अध्ययन केंद्र में समय पर जमा कराएं।
- अपने अध्ययन केंद्र और क्षेत्रीय केंद्र के संपर्क में रहें।
- क्षेत्र कार्य पर्यवेक्षण के लिए अध्ययन केंद्र में अपने क्षेत्र कार्य पर्यवेक्षक से मिलें।

परीक्षा फार्म समय पर भरें।

सत्रीय कार्य एक खुली किताब है और हम इग्नू में प्रत्येक पाठ्यक्रम के समग्र ग्रेड की गणना करते समय सत्रीय कार्यों के लिए 30% भारित देते हैं। **सत्रीय कार्य हस्तलिखित और स्वहस्ताक्षरित होने चाहिए।** सत्रीय कार्य—प्रतिक्रिया का एक अच्छा सेट तैयार करने के लिए आप उन सभी अध्यायों को पढ़ें जिनमें से सवाल तैयार किए गए हैं। आप अपने सहकर्मी, शैक्षिक परामर्शदाताओं और प्रोफेसर्स के साथ चर्चा करें, जिन्होंने आपको पढ़ाया है। मसौदा तैयार करें, उस पर आवश्यक सुधार करें और तब अंतिम संस्करण अध्ययन केंद्र में प्रस्तुत करने के लिए तैयार करें।

हर सवाल का जवाब देने के लिए नया पृष्ठ शुरू करें। लंबे और मध्यम जवाब देने के लिए एक परिचय, मुख्य भाग के लिए एक उप-शीर्षक और एक निष्कर्ष हो। प्रत्येक अनुच्छेद के बीच एक लाइन छोड़ें। आपके जवाब विशिष्ट हों और आपके अपने शब्दों में हो, यह किताब की नकल ना हो। आपके उत्तर इग्नू के पठन सामग्री पर आधारित हों। सत्रीय कार्य आपके सत्रांत परीक्षा की तैयारी है, इसलिए इसे गंभीरतापूर्वक लें।

डॉ. एन. रम्या
(कार्यक्रम समन्वयक)

जीवन की विशेषताओं और चुनौतियों का परिचय सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एस.डब्ल्यू-012

कुल अंक-100

- नोट : i) सभी पाँचों प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
ii) सभी पाँचों प्रश्नों के अंक समान हैं।
iii) प्रश्न सं. 1 और 2 के उत्तर, प्रत्येक के 600 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

- 1) उपयुक्त उदाहरणों के साथ बच्चों के जैविक विकास पर प्रसवपूर्व पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव की चर्चा करें। 20
या
समकालीन भारतीय समाज में किशोरावस्था के दौरान सामने आने वाली मनोवैज्ञानिक और सामाजिक चुनौतियों का विश्लेषण करें। 20
- 2) वयस्कता के दौरान एक सफल परिवार की स्थापना में अंतरंगता, प्रतिबद्धता और अनुकूलता की भूमिका की व्याख्या करें। 20
या
भारत में वृद्ध लोगों की स्थिति और समायोजन पर बदलती पारिवारिक संरचनाओं और शहरीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन करें। 20
- 3) निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए:
क) शैशवावस्था और बाल्यावस्था में विकासात्मक कार्यों के महत्व को समझाइए। 10
ख) किशोरों के सामाजिक विकास में साथियों और मीडिया की भूमिका पर चर्चा करें। 10
ग) वैवाहिक संबंधों में अंतरंगता स्थापित करने की बाधाओं पर प्रकाश डालें। 10
घ) सक्रिय वृद्धावस्था की अवधारणा और आधुनिक समाज में इसके महत्व को समझाइए। 10
- 4) निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखिए:
क) प्रसवपूर्व देखभाल के महत्व को समझाइए। 5
ख) किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य क्या हैं? 5
ग) पारिवारिक जीवन चक्र पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। 5
घ) वयस्कों के बीच भूमिका संघर्ष की अवधारणा को समझाइए। 5
ङ) भारत में बुजुर्गों को प्रभावित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कारक क्या हैं? 5
च) एक जराचिकित्सा सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका पर चर्चा करें। 5
- 5) निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच पर लगभग 100 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए:
क) भूमिका समूह 4
ख) पोषण संबंधी विकार 4
ग) मनोभ्रंश 4
घ) जनसंख्या वृद्धावस्था 4
ङ) माता-पिता की शैली 4
च) साथी चयन का फिल्टर सिद्धांत 4
छ) किशोरावस्था में पहचान संकट 4
ज) टेराटोजेन्स 4